प्रातः क्लास ओम्शान्ति पिता श्री 24-7-67

रिकार्ड:- बदल जाय दुनिया.. ओम्शान्ति। मीठे2 बच्चों ने यह गीत सुना। किसने सुना? आत्मा ने इन शरीर के कानों द्वारा सुना। बच्चों को यह भी मालूम पड़ा- आत्मा कितनी छोटी है। वह आत्मा इस शरीर में नहीं है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। कितनी छोटी आत्मा के आधार पर इतना बड़ा शरीर चलता है। दुनिया में किसको भी पता नहीं है कि आत्मा क्या चीज है। जो इस रथ (शरीर) पर विराजमान होती है अकाल मूर्त आत्मा का यह तख्त है। बच्चों को यह ज्ञान मिलता है। कितना रमणीक रहस्य युक्त है। कोई ऐसी रहस्य युक्त बातें सुनी जाती है तो चिन्तन चलता है। तुम बच्चों को भी यही चिन्तन चलना है। इतनी छोटी सी आत्मा है इतने बड़े शरीर में। आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नुंधा हुआ है। शरीर तो विनाश हो जाता है। बाकि आत्मा रहती है। यह बड़ी विचार कि बातें हैं। सवेरे उठ कर यह ख्याल करनी चाहिए। बच्चों को स्मृति आई है आत्मा कितनी छोटी है। उनको अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। मैं आत्मा कितनी वन्डरफुल हूं। यह नई ज्ञान है। जो दुनिया में किसको भी नहीं है। बाप ही बतलाते है। जो सुमिरण करना होता है। हम कितनी छोटी सी आत्मा हैं। कैसे पार्ट बजाते हैं। शरीर पहले छोटा फिर बड़ा होता है। 5 तत्वों का बनता है। बाबा को थोड़े ही मालूम पड़ता है शिव बाबा की आत्मा कैसे आती जाती है। ऐसे भी नहीं? सदैव इस में रहते हैं। तो यही चिन्तन करना है!? तुम बच्चों को बाप ऐसा ज्ञान दे रहे हैं जो कि कोई को मिल नहीं सकता। तुम जानते हो कि बरोबर यह ज्ञान उनकी आत्मा में भी नहीं था। और सतसंगों में ऐसी ऐसी बातों पर कोई ख्याल नहीं रहता। आत्मा और परमात्मा का ज्ञान रिंचक भी नहीं रहता। कोई साधु-सन्यासी आदि यह थोड़े ही समझते हैं कि हम आत्मा शरीर द्वारा उनको मंत्र देते हैं। आत्मा शरीर द्वारा शास्त्र पढ़ती है। एक भी मनुष्य मात्र आत्माभिमानी नहीं है। आत्मा का यह ज्ञान कोई को है नहीं। तो फिर बाप का ज्ञान कैसे होगा। तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं का बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम कितना समझदार बन रहे हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो समझे कि इस शरीर में जो आत्मा है उनको परम पिता परमात्मा बैठ पढ़ाते हैं। कितनी समझ की नई बात है। परन्तु फिर धन्धे आद में जाने से भूल जाते हैं। पहले2 तो बाप आत्मा का ज्ञान देते हैं। जो कोई भी मनुष्य मात्र को नहीं है। गायन भी है आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल। हिसाब है ना। तुम बच्चे जानते हो कि आत्मा ही बोलती है शरीर द्वारा। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा ही शरीर द्वारा अच्छा वा बुरे काम करती है। बाप आये आत्माओं को कितना गुल2 बनाते हैं। तो बाप कहते हैं सवेरे उठ कर यही ख्याल करो क्योंकि आत्मा क्या है जो इस शरीर द्वारा सुनती है। आत्मा का बाप है परम पिता परमात्मा। जिसको पतित पावन ज्ञान का सागर कहते हैं। यह निराकार परमात्मा की ही महिमा है। और सभी मनुष्य मात्र को अपना2 शरीर है। उनको कोई शरीर नहीं है। फिर उनको सुख का सागर पवित्रता का सागर, शान्ति का सागर कैसे कह सकते। लक्ष्मी नारायण को कहेंगे सदैव पवित्रता का सागर? नहीं। क्योंकि वह फिर अपवित्रता का सागर भी बन जाते हैं। एक बाप ही सदैव पवित्रता का सागर। मनुष्य तो सिर्फ भक्ति मार्ग के शास्त्रों का वर्णन करते हैं। प्रेक्टीकल अनुभवी नहीं है। ऐसे नहीं समझेंगे हम आत्मा इस शरीर से बाप की महिमा करते है। वह हमारा बहुत मीठा बाबा है। वह ही सुख देने वाला है। बाप कहते हैं हे आत्माएं अब मेरी मत पर चलो। यह अविनाशी आत्मा को अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी मत मिलती है। वह विनाशी शरीरों को विनाशी शरीरों की ही मत मिलती है। सतयुग में तो तुम वहां के प्रालब्ध पाते हो। वहां कब उलटी मत मिलती ही नहीं। अभी की श्री मत अविनाशी बन जाती है जो आधा कल्प चलती है। यह ज्ञान नया है। कितनी बुधि चाहिए इसको हजम करने की। और स्वरूप में आना चाहिए। जिन्होंने शुरू से बहुत भक्ति की होंगी वह ही अच्छी रीत धारणा कर सकेंगे। यह समझना चाहिए अगर हमारी बुधि में ठीक रीति धारणा नहीं होती है तो जरूर शुरू से हम ने भक्ति नहीं की

[illegible]

है। बाप कहते रहते हैं कुछ भी नहीं समझते हो तो बाप से पूछो। क्यों कि बाप है अविनाशी सर्जन। उनको सुप्रीम सोल कहा जाता है। आत्मा पवित्र बनती है तो उनकी महिमा होती है। आत्मा की महिमा है तो शरीर की भी महिमा होती है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर की भी महिमा नहीं। इस समय तुम बच्चों को बहुत गुह्य बुधि मिलती है। आत्मा को ही मिलती है। आत्मा को कितना मीठा बनना चाहिए। सब को सुख देना है। बाबा कितना मीठा है। आत्माओं को भी बहुत मीठा बनाते हैं। आत्मा कोई भी अकर्तव्य कार्य न करे। यह प्रैक्टीस करनी है। मेरे से कोई भी अकर्तव्य कार्य तो नहीं होता है। शिव बाबा कब अकर्तव्य कार्य करेंगे? नहीं। वह आते ही हैं उतम ते उतम कल्याणकारी कर्तव्य करने। सबको सदगति देते हैं। जो बाप कर्तव्य करते हैं वह बच्चों को भी करना चाहिए। यह भी समझाया है जिसने शुरु से लेकर बहुत भक्ति की होंगी उनको ही यह ज्ञान ठहरेगा। अभी भी भक्ति तो बहुत है। देवताओं की ढेर भक्ति है। अपना सिर देने लिए भी तैयार रहते हैं। रात दिन भक्ति में लगे रहते। बहुत भक्ति करने वालों के पिछाड़ी कम भक्ति करने वाले लटकते रहते हैं। उनकी महिमा करते है। उनका तो सब स्थुल में देखने में आता है। यहां तुम हो गुप्त। तुम्हारी बुधि में सृष्टि की आद मध्य अंत का सारा ज्ञान है। यह भी बच्चों को मालूम है बाबा हमको पढ़ाने आये हैं। अब फिर हम घर जावेंगे। जहां से हम आत्माएं आते हैं। वह हमारा घर है वहां शरीर ही नहीं तो आवाज कैसे हो। आत्मा बिगर शरीर क्या बन जाती है। मनुष्यों का शरीर में कितना मोह होता है। आत्मा तो उनसे निकल गई बाकि 5 तत्व उन पर कितना लव रहता है। चित्रा पर चढ़ते हैं। कितना मोह रहता है शरीर में। अभी तुम समझते हो नष्टोमोहा होना है सारी दुनिया से। यह शरीर तो खलास हो जाना ही है। तो उनसे मोह निकल जाना चाहिए। परन्तु मोह रहता है। वर्ष2 ब्राह्मण खिलाते हैं। याद करते हैं न पकलाने का ब्राह्मण है। अब वह थोड़ ही खा सकते हैं। तुम बच्चों को तो अब इन बातों से अलग होजाना चाहिए। ड्रामा है, हरेक अपना पार्ट बजाते हैं। इस समय तुमको ज्ञान है हमको नष्टोमोहा बनना है। मोह जीत राजा की आखानी भी है ना। और कोई मोह जीत राजा होता ही नहीं। यह तो कथाएं बहुत बनाई हैं। वहां अकाले मृत्यु होता नहीं तो पूछने की भी बात नहीं रहती। इस समय तुमको मोह जीत बनाते हैं। मोह जीत राजायें थे तो प्रजा भी थी। स्वर्ग में कोई का भी मोह नहीं रहता। यथा राजा रानी तथा प्रजा। ऐसे हसेते हैं। है ही नष्टोमोहा की राजधानी। रावण राज्य होता है तब मोह होता है। वहां कोई विकार होता नहीं। रावण राज्य ही नहीं। रावण की राजाई चली जाती है। रावण की राजाई को शैतानी राज्य कहा जाता है। राम राज्य में क्या होता है कुछ भी पता नहीं। सिवाय बाप के और कोई यह बातें बताये न सके। बाप इस शरीर में होते भी देहीअभिमानी है। लोन पर अथवा किराया पर मकान लेते हैं तो उस में भी मोह होता है। मकान को अछी रीत फर्निस कराते हैं। इसको तो फर्निश करना नहीं हैं। क्योंकि बाप तो अशरीरी है ना। इनको कोई भी सिंगार आद करने की प्रैक्टीस है नहीं। इनको तो सिर्फ यही प्रैक्टीस है अविनाशी ज्ञान रत्नों से बच्चों को सिंगारें। सृष्टि की आद मध्य अंत का राज समझावें। शरीर तो अपवित्र ही है। इनको जब दूसरा शरीर मिलेगा तो वह पवित्र नया होगा। इस समय तो यह पुरानी दुनिया है। यह खतम हो जानी है। यह भी किसको पता नहीं है कि पुरानी दुनिया खलास हो रही है। आस्ते2 मालूम पड़ेगा। नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश करना यह तो बाप का ही काम है। बाप ही आये ब्रह्मा द्वारा प्रजा रच नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। तुम नई दुनिया में हो ना। नई दुनिया में देवताएं रहते हैं। तुम्हारी खुशी देवताओं से भी उपर में है। संगम युग से ही नई दुनिया होगी। संगम युग सबसे उंच है। ब्राह्मणों की खुशी भी उंच है। बाप ने समझाया है तुम गोद में आते हो तो पहले यह याद करना है हम ईश्वर बाप की गोद में जाते हैं। शिव बाबा को याद कर फिर इनके गोद में

[illegible]

आओ। उस ने ही xx इस शरीर का लोन लिया है। तुम जानते हो शिव बाबा निराकार है। उनकी गोद में हम कैसे xxxx जावें। तो उस बाप को याद करके ही इस गोद में आना है। तुम जानते हो वह इसमें बैठा हुआ है। शरीर तो यह पतित है। तुम्हारा भी पतित है। आत्मा कहती है अब हम गोद में कैसे जावें। आत्मा आत्मा को तो गोद दे न सके। शरीर से ही सब काम होता है। अभी भी शरीर द्वारा ही मिलते हो। इनकी गोद में आते होतो यह कह देते हैं शिव बाबा को याद करो। हम शिव बाबा की गोद में जाते हैं। फिर तो कोई पाप नहीं होगा। उनकी याद में न रह कोई काम करते हो तो पाप लग जाता है। हम शिव बाबा की गोद में जाते हैं। फिर दूसरे जन्म में दूसरी गोद होगी। वहां देवताओं की गोद में जावेंगे। यह ईश्वरीय गोद एक ही बार मिलती है। मम्मा को भी छोड़ बाबा को याद करना पड़ता है। हम शिव बाबा की गोद में आये हैं वास्तव में गोद में भी आने की दरकार नहीं है। मुख से कहना है बाबा हमें आप का xx हो चुका। बहुत हैं कब देखा भी नहीं है बाहर में रहते हैं। लिखते हैं शिव बाबा हम आप की गोद के बच्चे xx हो चुके हैं। बुधि में ज्ञान है। आत्मा कहती है हम शिव बाबा की बन चुकी। इनके पहले हम पतित कि गोद में थे। भविष्य पवित्र देवता की गोद में जावेंगे। यह जन्म दुर्लभ है। हीरे जैसा यहां संगम पर बनते हैं इनको संगम युग कहा जाता है। संगम xx कोई उस पानी के सागर और नदियों नहीं कहा जाता। रात दिन का फर्क है। ब्रह्मपुत्रा बड़ी से बड़ी नदी है?। जो सागर में मिलती है, नदियां जाय सागर में पड़ती है। तुम भी ज्ञान सागर (शिव बाबा) से निकली हुई ज्ञान नदियां हो। ज्ञान सागर शिव बाबा है। बड़े से बड़ी नदी है ब्रह्मपुत्रा। इनका भी नाम ब्रह्मा है ना। सागर से इनका कितना मेल है। बुधि में धारण करो। तुमको मालूम है ना यह नदियां कहां से निकलती है।?(दो चार से बाप दादा ने पूछा) सागर से ही निकलती है फिर सागर में ही पड़ती है। सागर से मीठा पानी खेंचते हैं। सागर के बच्चे जाय सागर में मिलते हैं। तुम भी ज्ञान सागर से निकले हो फिर वहां चले जावेंगे। यह है ज्ञान सागर। जहां वह रहते है वहां तुम आत्मायें भी रहते हो। ज्ञान सागर आकर तुमको पवित्र मीठा बनाते है। आत्मा जो खारी बन गई है उनको मीठा बनाते हैं। 5 विकारों रूपी छी2 खाराण तुम से निकलती है। तो तुम तमो प्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो। बाप पुरुषार्थ बहुत कराते हैं। तुम कितनी सतोप्रधान स्वर्ग में रहते थे। अभी तुम बिलकुल छी2 बन गये हो। रावण ने तुमको क्या बनाया है। भारत में ही गाया xx जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक कौड़ी बदले क्यों खोया रे। बाबा कहते रहते हैं तुम कौड़ियों पिछाडी क्यों हैरान होते हो। कौड़ियां भी जास्ती थोड़े ही चाहिए। गरीब xxxxx जाते हैं। शाहुकार तो कहते हैं हमारे लिए अभी यहां स्वर्ग है। तुम बच्चे अभी समझते xx हो जो भी मनुष्य मात्र हैं सब का इस समय कौड़ी जैसा जन्म है। कुछ भी नहीं जानते। xx बिलकुल हीं तुच्छ बुधि हैं। हम भी ऐसे थे। अभी हमको बाबा क्या बनाते हैं। एम आबजेक्ट तो है ना। हम नर से नारायण बनते हैं। भारत अब कौड़ी जैसा कंगाल है ना। भारतवासी खुद थोड़े ही जानते। यहां तुम कितने साधारण अबलायें हो। कोई बड़ा आदमी होगा उनको यहां बैठने दिल न होगी। जहां बड़े2 xx बड़े2 आदमी गुरु सन्यासी आद लोग होंगे वहां के बड़े2 सभाओं में जावेंगे। बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज हूं। कहते हैं भगवान गरीबों की रक्षा करते हैं। अब गरीब तो गरीब ही रहते हैं। वह कोई शाहुकार थोड़े ही बन जाते। xx रक्षा फिर काहे की। अभी तुम जानते हो कितने शाहुकार xx थे। अब फिर बनते हो। बाबा लिखते भी हैं तुम पदमपति हो। वहां पैसे पर मारा मारी नहीं होती। यहां तो देखो पैसे पर मारा मारी कितना है। सब डाकू बन गये हैं। रिश्वत कितनी मिलती है। बड़े आदमी बनते हैं तो उनको बहुत कुछ मिल सकता है। रिश्वत खोरी को जितना बंद करते हैं उतना, और ही जास्ती होती जाती है। पैसे तो मनुष्यों को चाहिए ना। तुम जानते हो बाबा हमारा खजाना भरपूर कर देते हैं। जितना चाहिए उतना धन लो। परन्तु पुरुषार्थ पूरा करो। गफलत न करो। कहा जाता है पालो पादर। पादर को पालो करो तो

यह जाकर बनेंगे। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी। बड़ा भारी इम्तहान है। इसमें जरा भी गफलत न करनी चाहिए। बाप श्रीमत देते हैं तो फिर इस पर चलना है। कायदे कानून को उलंघन नहीं करना है। श्रीमत से ही तुम श्री बनते हो। मंजिल बहुत बड़ी है। अपना रोज का खाता रखो। कमाई की या नुकसान किया। कितना बाप को याद किया। कितने को रास्ता बताया। अंधों की लाठी तुम हो ना। वह हैं अंधे की औलाद अंधें। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। तुम्हारी में कितनी नालेज आ जाती है। समझते हो इस जन्म पवित्र बनेंगे तो 2। जन्म पवित्र रहेंगे। कोई भी विकर्म न करना चाहिए। पतित पावन बाप का बच्चा बन कर फिर कोई पाप का काम थोड़े ही करना चाहिए। इसलिए बाबा कहते हैं जितना हो सके बच्चों को भी बचाने की कोशिश करो। बच्ची नहीं चल सकती है तो समझा जाता है व्यभिचारी न बन जाय इसलिये शादी करनी पड़ती है। समझा जाता है इनकी तकदीर में नहीं है। कोई तो शादी कर बहुत दुखी होते हैं। फिर कहते हैं हम ने ब्रह्माकुमारियों का भी न माना। पछताव कर फिर आते हैं। बच्चियां भी उन्हों के पास जाते हैं। तो बच्चों को रहम दिल बनना है। भल कोई गिर जाते हैं तो भी रहम आता है उनको उठावें। पुरुषार्थ कर स्वर्गवासी तो बने। तुम को भी कल्याण कारी रहमदिल बनना चाहिए। बाप को फालो करना है। सब को रास्ता बताना है। बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। पहले2 यह समझाओ शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो। कृष्ण को कोई सब थोड़े ही याद करते हैं। सिर्फ एक बाप को याद करना है। वह बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। मुझे ही तुम पतितपावन कहते हो। मुझे याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गीता में भी लिखत है मामेकं याद करो। सिर्फ नाम शरीरधारी का डाल दिया है। भागीरथ तो यह है ना। यह सब है ब्रह्माकुमार कुमारियां। अधर कुमारी कुमारी कन्या के मंदिर भी यहां है। प्रेक्टीकल में तुम अभी हो। इस में कोई भी कापी नहीं कर सकेंगे। भल सफेद कपड़े वालों की आश्रम भी हैं परन्तु यह बात किसी की भी बुधि में नहीं आवेंगे। प्रजापिता के सन्तान सब ब्रह्मा कुमार कुमारी हो गये। कुमारी समझ कर फिर गन्धर्वी विवाह भी करती है परन्तु इकठे रहने में बड़ी मेहनत है। जो कब भी क्रिमनल असर न बने। थोड़ी होती है फिर सम्भाल खड़े हो जाते हैं। मनुष्य कहते हैं इम्पासिबुल है। आंखे ही है जो धोखा देती है। तुम्हारा प्रामिस है बाबा हम आप को कभी नहीं छोड़ेंगे। बाबा कहते हैं महान कम्बख्त देखना हो तो यहाँ देखो। जो ऐसे बाप को भी फारकति देदेते हैं। बाबा के पास रहते हुए भी कोशिश करते हैं बाबा हमको कुछ दो तो हम अलग जाय रहें। कोई बात में गुस्सा लगता है तो कहते हम नहीं रहेंगे। बाप को फारकति दे देते हैं। कितने ऐसे चले भी गये। कई अभी तक भी हैं। प्रबन्ध करके देवें तो झट फारकति दे देवें। महान बखतावर भी यहां। तो महान कम्बख्त भी यहां। देखो। किसको चावल कम मिले वा कपड़ा मिलने में देरी हुई तो कहेंगे इनसे तो घर जाना अच्छा है। यह सब परिक्षाएँ होती हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चों को तो दुख सुख हानि लाभ में सम रहना चाहिए। बखतावर बनने बदली कम्बख्त बनने देरी नहीं लगती। थोड़ा किसने कहा तो बस तैयारी कर लेते जाने की। माया गुस्सा मार देती है। तुम सब गज हो ना। गज को माया हप कर लेती है। अच्छा मीठे2 सिकिल्धे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापाव दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। ओम।

डैरेक्शनः- सेमिनार का जो बम्बई से प्रबन्ध कर रहे हैं सो सेमीनार देहली बदली मधुबन में होंगा। जिसको सामिल होना है वह अपने टापिक वा राय बाबा को लिख और बाबा से छूटी मांग सकते हैं। मधुबन आने फिर बाबा छूटी देन दे अख्तियार कोई को न मिलने से नाराज न हो। अच्छा अभी अब छूटी लेते है।

अभी बसंत का मौसम है। एक दो पार्टियां रिफ्रेश हो रही है। अच्छा अब विदाई। ओमशान्ति